लुढ़कता मटर

चित्र: वी. ग्लूज़डोव
हिंदी: अरविन्द गुप्ता

यूक्रेनी परी कथा

कभी एक आदमी रहता था जिसके छह बेटे और एक बेटी थी, जिसका नाम ओलेन्का था. एक दिन बेटे हल जोतने के लिए बाहर गए तो उन्होंने अपनी बहन से कहा कि वह उनका खाना खेत में ले आए.

ओलेन्का ने पूछा, "मैं तुम्हें वहां कैसे ढूंढूंगी?"

भाइयों ने कहा: "हम झोपड़ी से लेकर जुताई करने वाली जगह तक तक एक नाली खोदेंगे. यदि तुम नाली का अनुसरण करोगी तो फिर तुम हमें आसानी से ढूंढ लोगी."

उसके बाद भाई चले गये.

अब, मैदान के पार जंगल में एक ड्रैगन रहता था. उसने आकर भाइयों द्वारा बनाई गई नाली को मिट्टी से भर दिया, और फिर खुद की एक नाली बनाई, जो सीधे उसके घर के दरवाजे तक जाती थी. और जब ओलेन्का अपने भाइयों के लिए रात का खाना लेकर गई तो वह भी उस नाली की सीध में गई, और फिर वो सीधे ड्रैगन के आंगन में पहुंची. तुरंत ड्रैगन ने उसे पकड़ लिया.

शाम को भाई घर आये और उन्होंने अपनी माँ से कहा:

"हम पूरे दिन हल जोत रहे थे. आपने हमारे खाने के लिए कुछ क्यों नहीं भेजा?"

"नहीं मैने तुम्हारा खाना भेजा था!" माँ ने उत्तर दिया. "मैंने ओलेन्का को तुम्हारा खाना लेकर खेत में भेजा था, और मुझे लगा कि वह तुम्हारे साथ वापस आ रही होगी. लगता है वह कहीं अपना रास्ता भटक गई है."

भाइयों ने कहा, "हम जाकर उसकी तलाश करेंगे."

फिर सभी छह भाई एक-साथ निकल पड़े और ड्रैगन की नाली का पीछा करते हुए उसके आंगन तक पहुंच गए. वे गेट से अंदर आये, और उनकी बहन उनसे मिलने के लिए बाहर दौड़ी.

"ओह, मेरे भाइयों, मेरे प्यारे भाइयों, मैं तुम्हें कहाँ छिपाऊंगी?" ओलेन्का रोने लगी. "ड्रैगन अभी बाहर है, लेकिन जब वह वापस आएगा तो फिर वो तुम सबको खा जाएगा!"

तभी वहाँ ड्रैगन उनकी ओर उड़कर आ रहा था और साँप की तरह फुंफकार रहा था.

"मुझे एक आदमी की गंध आ रही है, मुझे कई आदमियों की गंध आ रही है!" ड्रैगन ने कहा. "अच्छा, मेरे लड़कों यह बताओ, क्या तुम मुझसे लड़ने आए हो या मेरे साथ शांति स्थापित करने आए हो?"

"हम तुमसे लड़ने के लिए!" भाइयों ने कहा.

"तो फिर, चलो, हम लोहे के खलिहान में चलें."

वे खलिहान में गये जहाँ की ज़मीन लोहे की बनी हुई थी, परन्तु वे अधिक देर तक नहीं लड़े. क्योंकि ड्रैगन ने उन्हें अपने एक ही प्रहार में फर्श पर गिरा दिया. फिर ड्रैगन ने उन्हें मृत अवस्था में बाहर निकाला, और एक गहरी कालकोठरी में फेंक दिया.

माँ और पिता अपने बेटों के लौटने का इंतज़ार करते रहे, लेकिन उनका इंतज़ार व्यर्थ रहा.

एक दिन माँ कपड़े धोने की लिए नदी पर गयी. उसने सड़क पर अपनी ओर लुढ़कते हुए एक छोटी मटर आते हुए देखी. उसने मटर उठाई और खा ली, फिर कुछ ही समय में उसके एक बेटे का जन्म हुआ और उसने उसे "लुढ़कता मटर" नाम दिया.

लुढ़कता मटर बहुत तेज़ी से बढ़ा, वह बढ़ता गया और बढ़ता गया, और यद्यपि वो उम्र में छोटा था, फिर भी वह बड़ा और ताकतवर था.

एक दिन पिता और लुढ़कता मटर एक कुआँ खोद रहे थे, और उनका फावड़ा एक पत्थर से टकराया. वह एक बहुत बड़ा पत्थर था, और पिता उसे निकालने में मदद करने के लिए अपने पड़ोसियों को बुलाने के लिए गए. लेकिन लुढ़कते मटर ने पिता के वापस आने से पहले ही पत्थर को उठाकर बाहर फेंक दिया. पड़ोसियों ने जब देखा तो वे आश्चर्यचकित भी हुए और भयभीत भी, क्योंकि उन्होंने देखा कि लुढ़कता मटर उनमें से हर किसी से अधिक ताकतवर था. सचमुच, वे इतने डरे हुए थे कि वे उसे मार डालना चाहते थे. लेकिन लुढ़कते मटर ने पत्थर को हवा में उछाला और फिर से उसे पकड़ लिया. उसकी ताकत का यह कारनामा देखकर सारे पड़ोसी भाग गए.

पिता-पुत्र खुदाई करते रहे. उन्होंने तब तक खोदा जब तक कि उनकी कुदाल लोहे के एक बड़े टुकड़े से नहीं टकराई, और फिर लुढ़कते मटर ने उसे उठाकर छिपा दिया.

कुछ समय बीत गया, और एक दिन लुढ़कते मटर ने अपने माता-पिता से पूछा कि क्या यह सच था कि उसके छह भाई और एक बहन थे.

"वास्तव में यह सच बात है, बेटा," माता-पिता ने कहा. "लेकिन वे एक बार चले गए और फिर कभी वापिस नहीं लौटे." और फिर उन्होंने लुढ़कते मटर को पूरी कहानी बतायी.

"मैं उनकी तलाश में जाऊंगा," लुढ़कते मटर ने कहा.

मां-बाप उससे ऐसा न करने की मिन्नत की.

"ऐसा मत करो, बेटा," उन्होंने कहा. "तुम्हारे भाई तुम्हारी बहन को ढूंढ़ने गए, और वे सभी छह लड़के मारे गए, और तुम तो एकदम अकेले हो इसलिए तुम्हारा भी वही हाल होगा."

"नहीं, नहीं, मैं जाऊँगा!" लुढ़कते मटर ने कहा, "वे मेरे अपने मांस और खून हैं और मैं यह पता लगाऊंगा होगा कि उनका क्या हश्र हुआ."

फिर जो लोहे का टुकड़ा उसे मिला था, वह उसे लोहार के पास लेकर गया. "मेरे लिए एक तलवार बनाओ. वो जितनी ज़्यादा बड़ी होगी, उतनी ही अच्छी होगी!" लुढ़कते मटर ने कहा. फिर लोहार ने उसके लिए इतनी बड़ी और भारी तलवार बनाई जिसे कोई भी उसकी दुकान से उठाकर नहीं ले जा सकता था. लेकिन लुढ़कते मटर ने उसे आसानी से उठा लिया और उसे हवा में ऊंचा उछाला.

"अब मुझे गहरी नींद आएगी," उसने अपने पिता से कहा. "आप बारह दिनों के बाद मुझे जगा दें, तब तक तलवार उड़कर वापस आएगी."

वह बिस्तर पर लेट गया और बारह दिनों तक सोता रहा, और फिर तेरहवें दिन तलवार उड़ती हुई वापस आई, और उसने उड़ते समय गुनगुनाहट की आवाज की. पिता ने लुढ़कते मटर को जगाया. लुढ़कता मटर उछला और उसने अपनी एक उंगली आगे कर दी, और तलवार उससे आकार टकराई और फिर दो हिस्सों में टूट गई.

"मैं इतनी घटिया तलवार के साथ अपने भाइयों और बहन की तलाश में नहीं जा सकता हूं," लुढ़कते मटर ने कहा, "मेरे पास इससे बेहतर तलवार होनी चाहिए."

और फिर वो टूटी हुई तलवार उठाकर लोहार के पास वापिस गया, "इससे मेरे लिए एक नई तलवार बना दो," उसने कहा. “देखो, इस बार मेरे जैसे ताकतवर आदमी के लिए एक उपयुक्त तलवार बनाओ!"

लोहार ने उसके लिए एक ऐसी तलवार बनाई जो पहली से भी बड़ी थी. लुढ़कते मटर ने उसे दुबारा हवा में उछाला और फिर बिस्तर पर लेट गया और फिर अगले बारह दिनों तक सोता रहा. तेरहवें दिन तलवार उड़ती हुई गुंजन करती हुई आई जिससे पृथ्वी हिलने और कांपने लगी. माता और पिता ने लुढ़कते मटर को जगाया. वो तुरंत अपने पैरों पर खड़ा हो गया और उसने अपनी एक उंगली उठाई और तलवार उससे जाकर टकराई लेकिन इस बार तलवार टूटी नहीं केवल थोड़ी सी मुड़ गई.

"यह वास्तव में एक अच्छी तलवार है!" लुढ़कते मटर ने कहा. "अब मैं अपने भाइयों और बहन की तलाश में जा सकता हूं. माँ, मेरे लिए कुछ रोटी बनाओ, और फिर मैं अपनी यात्रा पर निकलूंगा."

उसने अपनी तलवार और थैला भर रोटी लीं और फिर अपनी माँ और पिता को अलविदा कहकर घर से चल दिया.

उसने ड्रैगन के घर का पीछा किया, और वो जल्द ही जंगल में काफी अंदर चला गया. वह तब तक चलता रहा जब तक कि वह एक बाड़े वाले आंगन में नहीं पहुंच गया, और उसके बीच में एक बड़ा घर था. वह आँगन में घुसा और घर में चला गया, और वहाँ उसे अपनी बहन ओलेन्का मिली.

"शुभदिन, बेटी!" लुढ़कते मटर ने कहा, जो नहीं जानता था कि वो उसकी बहन थी.

ओलेन्का ने कहा, "आपको भी शुभदिन, अच्छे युवा! आप यहां क्यों आए हैं. ड्रैगन अभी बाहर गया है, लेकिन वो जल्द ही वापस आएगा और आपको खा जाएगा."

"हम देखेंगे! शायद वह मुझे नहीं खा पायेगा. लेकिन तुम कौन हो, लड़की, और तुम यहाँ क्यों हो?"

"मैं अपनी माँ और पिता के साथ रहती थी, लेकिन ड्रैगन मुझे उठाकर ले आया, और हालाँकि मेरे छह भाइयों ने मुझे छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन वे भी उसमें सफल नहीं हुए."

"तुम्हारे भाई कहाँ हैं?" लुढ़कते मटर ने पूछा.

"ड्रैगन ने उन्हें कालकोठरी में फेंक दिया, और मुझे यह भी नहीं पता कि वे अब जीवित हैं या मृत."

"शायद मैं तुम्हें मुक्त कर सकता हूँ," लुढ़कते मटर ने कहा.

"जब मेरे छह भाई वो काम नहीं कर सके, तो फिर आप अकेले वो कैसे कर पाएंगे!"

"हम देखेंगे, हम देखेंगे!" लुढ़कते मटर ने कहा.

फिर वह खिड़की के पास बैठकर प्रतीक्षा करने लगा.

धीरे-धीरे ड्रैगन उड़कर वापस आया. वह घर में उड़कर आया और उसने अपनी नाक से सूंघकर कहा.

"मुझे एक आदमी की गंध आ रही है!" वह चिल्लाया.

"बेशक आप एक आदमी को सूंघ रहे हैं, क्योंकि मैं यहाँ हूँ!" लुढ़कते मटर ने आगे आते हुए कहा.

"और तुम यहाँ क्यों आए हो, मेरे बेटे? क्या तुम मुझसे लड़ना चाहते हो या मेरे साथ शांति स्थापित करना चाहते हो?"

"मैं तुमसे लड़ने के लिए! आया हूं" लुढ़कता मटर चिल्लाया.

"अच्छा, तो चलो लोहे के खलिहान में चलते हैं."

"चलो!"

वे लोहे के खलिहान ने फर्श पर आए और वहां पर ड्रैगन का सामना लुढ़कते मटर से हुआ.

"आप पहले हमला करें," ड्रैगन ने कहा.

"नहीं आप करें!" लुढ़कते मटर ने कहा.

उन्होंने अपनी तलवारें खींच लीं और ड्रैगन ने लुढ़कते मटर पर ऐसा जोरदार प्रहार किया कि वह टखने तक लोहे के खलिहान में जा धंसा. लेकिन लुढ़कते मटर एक बार फिर बाहर आया और उसने अपनी तलवार लहराई और ड्रैगन को एक जवाबी झटका दिया जिससे वह घुटनों तक लोहे के खलिहान में जा गिरा. ड्रैगन ने खुद को बाहर निकाला और वह फिर से लुढ़कते मटर के सामने आया और उसने उसे फर्श में गहराई तक धकेल दिया. लेकिन लुढ़कता मटर डरने वालों में से नहीं था, और उसने ड्रैगन को एक झटका दिया जिससे वह फर्श पर जा गिरा और फिर फिर एक और वार में ड्रैगन की वहीं मौके पर ही मौत हो गई.

फिर लुढ़कता मटर कालकोठरी में गया, वहां उसने अपने भाइयों को मुक्त कराया जो जीवित से अधिक मृत थे, और उन्हें और अपनी बहन ओलेन्का और ड्रैगन के घर के सभी सोने-चांदी को साथ लेकर वो अपने घर के लिए निकल पड़ा. लेकिन उसने उन्हें यह कभी नहीं बताया कि वह उनका भाई था.

वे रास्ते में कितने लंबे समय तक चले यह कोई नहीं जानता, लेकिन धीरे-धीरे वे एक ओक के पेड़ के नीचे आराम करने के लिए बैठ गए. लड़ाई के बाद लुढ़कता मटर इतना थक गया था कि वह गहरी नींद में सो गया. और उसके छह भाइयों ने आपस में इस पर चर्चा की, और कहा:

"लोग हम पर हंसेंगे जब उन्हें पता चलेगा कि हम छह भाई मिलकर भी ड्रैगन को नहीं मार सके जबकि इस युवा लड़के ने अकेले ही वो सबकुछ कर दिखाया. और इसके अलावा उसे ड्रैगन की सारी दौलत भी मिल जाएगी."

और उन्होंने तय किया कि जब लुढ़कता मटर सो रहा और वह एकदम असहाय होगा तो वे उसे ओक के पेड़ से बांध देंगे और उसे जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए वहीं छोड़ देंगे.

भाइयों ने वो काम तुरंत किया. उन्होंने लुढ़कते मटर को पेड़ से बांध दिया और वे उसे वहीं छोड़कर चले गए.

लेकिन लुढ़कता मटर सोता रहा और उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ. वह एक दिन के लिए सोया और एक रात के लिए सोया, और जब वह उठा तो उसने खुद को ओक के पेड़ से बंधा हुआ पाया. लेकिन जब उसने झटका दिया और आह भरी, तब तुरंत पेड़, अपनी जड़ों के साथ जमीन से बाहर निकाल आया, और लुढ़कते मटर ने पेड़ को अपने कंधे के ऊपर रख लिया और फिर वो घर की ओर चल पड़ा. वह घर के पास आया और उसने अपने भाइयों को अपनी माँ से बात करते हुए सुना.

"हमारे घर छोड़ने के बाद क्या आपके और भी बच्चे हुए माँ?" भाइयों ने माँ से पूछा.

"हाँ, सच में!" माँ ने उत्तर दिया. "मेरा एक बेटा हुआ, जिसका नाम लुढ़कता मटर है, और वो तुम्हें ढूंढने गया था."

"तो फिर यह वही होगा जिसे हमने ओक के पेड़ से बांधा होगा! बेहतर होगा कि हम तुरंत वापस जाएं और उसे खोल दें!" भाइयों ने कहा.

लेकिन लुढ़कते मटर ने अपने कंधे के ऊपर के ओक को लहराया और झोपड़ी की छत पर इतनी जोर से मारा कि झोपड़ी पूरी तरह से जमीन पर गिरकर ध्वस्त हो गई.

"आप जहां हैं वहीं रहें क्योंकि आप जो हैं वही हैं और उससे बेहतर कुछ नहीं हैं, मेरे भाइयों!" वो चिल्लाया. "अब मैं अकेले ही जाऊंगा और पूरी दुनिया में घूमूंगा."

और फिर वह अपनी तलवार कंधे पर उठाकर अपने रास्ते चल पड़ा.

वह आगे बढ़ता गया और उसने अपने सामने दो पहाड़ देखे. उनके बीच एक आदमी खड़ा था जो अपने दोनों हाथों और पैरों से पहाड़ों को अलग करने की कोशिश कर रहा था.

"शुभदिन दोस्त!" लुढ़कते मटर ने कहा.

"आपको भी शुभदिन!" आदमी ने उत्तर दिया.

"आप क्या कर रहे हैं?"

"मैं रास्ता बनाने के लिए इन दोनों पहाड़ों को अलग कर रहा हूँ."

"और आप कहां जा रहे हैं?"

"दुनिया को देखने और अपना भाग्य आजमाने के लिए."

"मैं भी यही करने निकला हूँ! आपका नाम क्या है?"

"पहाड़-हटाऊ. तुम्हारा क्या है?"

"लुढ़कता मटर. फिर क्या, दोनों साथ चलते हैं !"

"चलो!"

फिर वे एक साथ चले, वे चले और वे चले, और उन्होंने जंगल में एक आदमी को देखा जो ओक के पेड़ों को उनकी जड़ों से उखाड़ रहा था. वो पेड़ को बस खींचता था, और पेड़ तुरंत जड़ समेत बाहर निकल आता था.

"शुभदिन दोस्त!" लुढ़कते मटर और पहाड़-हटाऊ ने कहा.

"आपको भी शुभदिन, मेरे लड़कों!" आदमी ने कहा.

"आप क्या कर रहे हैं?"

"रास्ता बनाने के लिए मैं पेड़ों को उखाड़ रहा हूँ."

"आप कहां जा रहे हैं?"

"अपनी किस्मत तलाशने के लिए."

"हम भी यही करने को निकले हैं. आपका नाम क्या है?"

"पेड़-उखाड़ू. तुम्हारा क्या है?"

"लुढ़कता मटर और पहाड़-हटाऊ. चलो, हम साथ चलें!"

"चलो!"

इसलिए वे तीनों एक साथ आगे बढ़े. वे चलते रहे, चलते रहे, और धीरे-धीरे उन्होंने एक आदमी को नदी के किनारे बैठे देखा. उस आदमी की मूंछें सबसे लंबी थीं, और वो उनमें से केवल एक को घुमाता था ताकि पानी अलग हो जाए और दो हिस्सों में बंट जाए, जिससे एक रास्ता निकल आए और फिर सभी लोग नदी के तल पर चलने में सक्षम हो सकें.

"शुभदिन दोस्त!" उन्होंने उसे बुलाया.

"आपको भी शुभदिन, मेरे लड़कों!"

"आप क्या कर रहे हो?"

"नदी पार करने के लिए पानी को को हिस्सों में बाँट रहा हूं."

"तुम कहाँ जा रहे हो?"

"अपनी किस्मत तलाशने के लिए."

"हम भी यही करने निकले हैं. आपका नाम क्या है?"

"मूंछ-मरोड़ू. तुम्हारा क्या है?"

"लुढ़कता मटर, पहाड़-हटाऊ और पेड़-उखाड़ू. चलो, साथ चलें!"

"चलो!"

वे एक साथ आगे बढ़े और उनका रास्ता आसान रहा, क्योंकि पहाड़-हटाऊ हर पहाड़ को अलग कर देता, पेड़-उखाड़ू हर जंगल को उखाड़ देता और मूंछ-मरोड़ू उनके रास्ते में आने वाली हर नदी के पानी को बाँट देता था.

वे चलते रहे और वे चलते रहे, और वे एक बड़े जंगल के बीच में खड़ी एक छोटी सी झोपड़ी के पास आये. उन्होंने अंदर कदम रखा, और - क्या आप यकीन करेंगे - वहां अंदर कोई नहीं था.

"यही वह जगह है जहां हम रात बिताएंगे," लुढ़कते मटर ने कहा.

उन्होंने झोपड़ी में रात बिताई और सुबह लुढ़कते मटर ने कहा:

"तुम घर पर रहो, पहाड़-हटाऊ, और हमारे लिए रात का खाना पकाओ, और हम तीनों शिकार करने जायेंगे."

वे चले गए, और पहाड़-हटाऊ ने एक बड़ा रात्रिभोज बनाया और फिर वो सोने के लिए लेट गया. अचानक दरवाज़े पर आवाज़ आई: ठक, ठक, ठक!

"दरवाजा खोलो!" कोई चिल्लाया.

"यहाँ तुम्हारा कोई नौकर नहीं है जो दरवाज़ा खोले!" पहाड़-हटाऊ ने वापस जवाब दिया. दरवाज़ा खुला, और वही आवाज़ फिर से आयी:

"मुझे दहलीज के पार ले चलो!"

"तुम मेरे मालिक नहीं हो, इसलिए शिकायत मत करो!" पहाड़-हटाऊ ने वापस कहा.

और लो! - वहाँ सबसे छोटा बूढ़ा आदमी, जिसे कभी देखा गया था, दहलीज पर चढ़ आया. उसकी दाढ़ी इतनी लंबी थी कि वह फर्श पर लिथड़ रही थी. छोटे बूढ़े आदमी ने पहाड़-हटाऊ को बालों से पकड़ा और उसे दीवार पर एक कील पर लटका दिया.

फिर उसने वह सब कुछ खाया जो उसे खाना था और जो कुछ उसे पीना था वह उसने पी लिया. फिर पहाड़-हटाऊ की पीठ से त्वचा की एक लंबी पट्टी काटने के बाद बूढ़ा वहां से चला गया.

पहाड़-हटाऊ ने कील को घुमाया और हिलाया जब तक कि वह ढीली नहीं हो गई, और फिर उसने नए सिरे से रात का खाना पकाने का काम शुरू किया. जब उसके दोस्त वापस आये तो वह अभी भी खाना बना रहा था.

"आप रात का खाना बनाने में इतनी देर क्यों कर रहे हैं?" उन्होंने पूछा.

"मुझे झपकी आ गई और फिर मैं खाने के बारे में सब भूल गया." पहाड़-हटाऊ ने कहा.

उन्होंने पेट भर खाया और फिर वे बिस्तर पर चले गए, और अगली सुबह लुढ़कते मटर ने कहा:

"अब तुम घर पर रहो, पेड़-उखाड़ू, और हममें से बाकी लोग शिकार करने जायेंगे."

वे चले गए, और पेड़-उखाड़ू ने एक बड़ा रात्रिभोज बनाया और सोने के लिए लेट गए. अचानक दरवाज़े पर आवाज़ आई: ठक, ठक, ठक!

"दरवाजा खालो!" एक आवाज आयी.

"मैं तुम्हारा नौकर नहीं हूँ कि दरवाज़ा खोलूँ!" पेड़-उखाड़ू ने कहा.

"मुझे दहलीज के पार ले चलो!" वही आवाज फिर से आयी.

"तुम मेरे मालिक नहीं हो, इसलिए विलाप या शिकायत मत करो!" पेड़-उखाड़ू ने उत्तर दिया.

और लो! - वहाँ दहलीज पर चढ़कर झोपड़ी में सबसे छोटा बूढ़ा आदमी आया, जिसे कभी देखा गया था, जिसकी दाढ़ी इतनी लंबी थी कि वह फर्श पर बिखरी हुई थी. उसने पेड़-उखाड़ू को बालों से पकड़ा और उसे एक कील पर लटका दिया, और फिर उसने वह सब खाया जो उसे खाना था और जो कुछ उसे पीना था वह उसने पी लिया. फिर पेड़-उखाड़ू की पीठ से त्वचा की एक लंबी पट्टी काटने के बाद, बूढ़ा वहां से चला गया.

पेड़-उखाड़ू इस तरह और उस तरह घूमता रहा जब तक कि वह मुक्त होने में सफल नहीं हो गया, और फिर वह तुरंत रात का खाना नए सिरे से पकाने की तैयारी की.

जब उसके दोस्त वापस आये तो वह तभी भी खाना पका रहा था.

"आपको रात का खाना पाने में इतनी देर क्यों हुई?" उन्होंने पूछा.

पेड़-उखाड़ू ने कहा, "मुझे झपकी आ गई और थोड़ी देर पहले ही उठा."

लेकिन पहाड़-हटाऊ ने कुछ नहीं कहा, क्योंकि वह जानता था कि क्या हुआ था.

तीसरे दिन मूंछ-मरोड़ू घर पर रहा और उसके साथ भी वही हुआ.

फिर लुढ़कते मटर ने कहा:

"वास्तव में आप तीनों को रात का खाना मिलने में देर हो रही है! कल आप शिकार पर जायें, और मैं घर पर रहूँगा."

सुबह हो गई, और लुढ़कता मटर घर पर ही रहा जबकि उसके तीन दोस्त शिकार पर गए. उसने एक बड़ा खाना बनाया, और जैसे ही वह सोने के लिए लेटा, दरवाजे पर एक आवाज़ आई: ठक, ठक, ठक!

"दरवाजा खोलो!" कोई चिल्लाया.

लुढ़कते मटर ने दरवाज़ा खोला, और उसके सामने अब तक का सबसे छोटा बूढ़ा आदमी था, जिसकी दाढ़ी इतनी लंबी थी कि वह फर्श पर लटकी हुई थी.

"मुझे दहलीज के पार ले चलो, मेरे बेटे!" छोटे बूढ़े ने कहा.

लुढ़कते मटर ने उसे उठाया, झोपड़ी में ले गया, और उसे फर्श पर लिटा दिया, और छोटा बूढ़ा आदमी गोल-गोल नाचने लगा और उस पर छोटी-छोटी उड़ान भरने लगा.

"आप क्या चाहते हैं?" लुढ़कते मटर ने पूछा.

"आप जल्द ही देखेंगे कि मैं क्या चाहता हूँ!" छोटे बूढ़े आदमी ने कहा, और, अपना हाथ बढ़ाकर, वह लुढ़कते मटर को बालों से पकड़ने ही वाला था, लेकिन लुढ़कता मटर चिल्लाया: "आह, तुम भी अच्छे नहीं हो!" और फिर उसने बूढ़े को दाढ़ी से पकड़ लिया.

फिर, एक कुल्हाड़ी लेकर, वह छोटे बूढ़े आदमी को घसीटकर एक ओक के पेड़ के पास ले गया, उसने ओक के पेड़ को दो हिस्सों में विभाजित कर दिया और छोटे बूढ़े आदमी की दाढ़ी को दरार में डाल दिया.

"आप इतने बुरे हैं कि आपने मेरे बाल पकड़ने की कोशिश की," उसने छोटे बूढ़े आदमी से कहा, “देखो, अब तुम्हें मेरे लौटने तक तुम्हें यहीं रहना होगा."

वह झोपड़ी में वापस गया और उसने देखा कि उसके तीन दोस्त उसका इंतजार कर रहे थे.

"क्या रात्रि भोज तैयार है?" उन्होंने पूछा.

"हां, वह तैयार है और लंबे समय से आपका इंतजार कर रहा है," लुढ़कते मटर ने उत्तर दिया.

वे बैठ गए और खाना शुरू कर दिया, और खाना ख़त्म करने के बाद लुढ़कते मटर ने उनसे कहा:

"मेरे साथ आओ और मैं तुम्हें एक सबसे असामान्य दृश्य दिखाऊंगा!"

वह उन्हें बाहर ले गया, लेकिन, अजीब बात यह हुई, कि वहां अब कोई ओक का पेड़ नहीं था और कोई छोटा बूढ़ा आदमी भी नहीं था. क्योंकि उस छोटे बूढ़े आदमी ने ओक के पेड़ को जड़ से उखाड़ दिया था और वो उसे अपने साथ खींचकर ले गया था.

लुढ़कते मटर ने फिर अपने दोस्तों को उसके साथ जो कुछ हुआ था, उसके बारे में बताया और उन्होंने अपनी ओर से कबूल किया कि छोटे बूढ़े व्यक्ति ने उन्हें कील से लटका दिया था और उनकी पीठ से त्वचा की पट्टियाँ काटी थीं.

"वह एक दुष्ट, छोटा बूढ़ा आदमी है, और इससे बेहतर होगा कि हम जाकर उसे खोजें," लुढ़कते मटर ने कहा.

अब, छोटा बूढ़ा आदमी जब ओक के पेड़ को खींच रहा था और उसने एक रास्ता छोड़ दिया था जिसका अनुसरण करना उनके लिए आसान था, और वह उन्हें जमीन में इतने गहरे गड्ढे तक ले गया कि वह अथाह गहरा लग रहा था.

लुढ़कते मटर ने पहाड़-हटाऊ से कहा:

"गड्ढे से नीचे उतरो, पहाड़-हटाऊ!" उसने कहा.

"मैं नहीं जाऊंगा!" पहाड़-हटाऊ ने उत्तर दिया.

"तुम्हारा क्या ख्याल है, पेड़-उखाड़ू और मूंछ-मरोड़ू?"

लेकिन न तो पेड़-उखाड़ू और न ही मूंछ-मरोड़ू छेद से नीचे जाने का जोखिम उठाने को तैयार थे.

"बहुत अच्छा, फिर मैं ही वो यह करूँगा!" लुढ़कते मटर ने कहा. "आओ एक रस्सी बांधों!"

उन्होंने एक रस्सी बाँधी और लुढ़कते मटर ने उसके एक सिरे को अपने हाथ पर लपेट लिया.

"अब मुझे नीचे करो!" उसने कहा.

उन्होंने उसे नीचे छोड़ना शुरू कर दिया और इसमें उन्हें काफी समय लगा, क्योंकि गड्ढा इतना गहरा था कि उसकी तली तक पहुंचना पाताल लोक तक पहुंचने जैसा था. लेकिन आख़िरकार उन्होंने उसे नीचे उतारा, और लुढ़कते मटर उस जगह का पता लगाने के लिए निकल पड़ा. वह चलता रहा, और फिर उसके सामने एक विशाल महल आया. वह अंदर घुसा, और वहां सब कुछ जगमगा उठा, क्योंकि महल सोने और बहुमूल्य पत्थरों से बना था. वह एक कक्ष से दूसरे कक्ष में घूमता रहा, और अचानक उसकी ओर एक राजकुमारी दौड़ती हुई आई. वह इतनी सुंदर थी कि कोई भी कलम उसका वर्णन नहीं कर सकती थी और कोई भी जीभ उसकी प्रशंसा नहीं कर सकती थी.

"आप यहाँ क्यों आए हैं, अच्छे युवा?" उसने पूछा.

लुढ़कते मटर ने कहा, "मैं जमीन पर फैली दाढ़ी वाले एक छोटे बूढ़े आदमी की तलाश कर रहा हूं."

"आह," उसने कहा, "छोटे बूढ़े आदमी की दाढ़ी एक ओक के पेड़ की दरार में फंस गई है और वह उसे बाहर निकालने की कोशिश कर रहा है. उसके पास मत जाओ नहीं तो वह तुम्हें मार डालेगा जैसा कि उसने पहले कई लोगों के साथ किया है."

"वह मुझे नहीं मारेगा," लुढ़कते मटर ने कहा. "वह तो मैं ही था जिसने उसकी दाढ़ी दरार में फंसाई थी. लेकिन तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो?"

राजकुमारी ने कहा, "मैं एक राजकुमारी हूं और एक राजा की बेटी हूं. वह छोटा बूढ़ा आदमी मुझे ले आया और उसने मुझे यहां बंदी बनाकर रखा है."

"मैं तुम्हें मुक्त कर दूँगा, डरो मत! बस मुझे उसके पास ले चलो."

राजकुमारी लुढ़कते मटर को छोटे बूढ़े आदमी के पास ले गई, और देखो! - वह वहीं बैठा, अपनी दाढ़ी को सहला रहा था, जिसे वो दरार से बाहर निकालने में सफल हुआ था. लुढ़कते मटर को देखते ही छोटा बूढ़ा आदमी गुस्से से लाल हो गया.

उन्होंने पूछा, "तुम यहाँ क्यों आये हो? क्या तुम मुझसे लड़ने आए हैं या मेरे साथ शांति बनाने आए हो?"

"मैं यहाँ तुमसे लड़ने के लिए आया हूँ!" लुढ़कते मटर ने कहा, "क्या तुमको लगता है कि मैं तुम जैसे लोगों के साथ शांति बनाऊंगा?"

फिर उनके बीच तलवारें खिंच गईं, और वे लंबे समय तक और भयंकर रूप से लड़ते रहे जब तक कि अंततः लुढ़कते मटर ने छोटे बूढ़े व्यक्ति पर जोरदार प्रहार नहीं किया और उसे मार डाला.

उसके बाद लुढ़कते मटर और राजकुमारी ने महल में उन्हें जितना भी सोना और रत्न मिले, उन्हें लिया और उन्हें तीन बोरियों में भरकर उस छेद के पास गए, जिसके नीचे से लुढ़कता मटर भूमिगत साम्राज्य में आया था.

वे जल्द ही वहां पहुंच गए और लुढ़कते मटर ने अपने दोस्तों की ओर चिल्लाना शुरू किया.

"क्या तुम अभी भी वहाँ हो, मेरे भाइयों?" वह चिल्लाया.

"हम हैं!" जवाब आया.

लुढ़कते मटर ने एक बोरे को रस्सी से बाँध दिया.

"इसे ऊपर खींचो, भाइयों!" वह फिर चिल्लाया. "यह बोरी तुम्हारी है!"

उन्होंने बोरी को ऊपर खींचा और रस्सी को नीचे लटकाया, और फिर लुढ़कते मटर ने दूसरी बोरी को बांध दिया.

"इसे ऊपर खींचो! यह भी तुम्हारी है!" लुढ़कता मटर चिल्लाया.

उसने तीसरी बोरी भी ऊपर भेजी और फिर राजकुमारी को रस्सी से बाँध दिया.

"राजकुमारी मेरी है!" उसने चिल्लाकर कहा.

तीनों दोस्तों ने राजकुमारी को बाहर निकाला, और अब छेद के नीचे केवल लुढ़कता मटर ही बचा था.

"चलो हम उसे थोड़ा ऊपर खींचेंगे और फिर रस्सी को छोड़ देंगे." उन्होंने कहा, "उससे वह गिरकर मारा जाएगा, और फिर राजकुमारी हमारी हो जाएगी."

लुढ़कते मटर को इस बात का अनुमान लग गया वे क्या करेंगे इसलिए उसने रस्सी से एक बड़ा पत्थर बाँध दिया.

"अब मुझे ऊपर खींचो!" वो चिल्लाया.

उन्होंने रस्सी खींची और फिर उसे छोड़ दिया, और पत्थर धड़ाम से नीचे आकर गिरा!

"यह मेरे बहुत अच्छे दोस्तों का हाल है!" लुढ़कते मटर ने कहा, और वह छेद के निचले भाग में राज्य में घूमने के लिए निकल पड़ा. वह चलता रहा, और अचानक आकाश में बादल छा गए, और वर्षा होने लगी, और ओले भी गिरे. लुढ़कता मटर एक ओक के पेड़ के नीचे छिप गया. जब वह वहाँ खड़ा था तो उसने पेड़ की चोटी पर एक घोंसले से चील के बच्चों की चहचहाहट सुनी. वह पेड़ पर चढ़ गया और उसने अपना कोट उतारकर चील के बच्चों को उससे ढक दिया.

बारिश रुक गई और एक विशाल चील, बच्चों का पिता, उड़ता हुआ आया.

"वह कौन था जिसने तुम्हें ढका था, मेरे नन्हें बच्चों?" चील ने पूछा.

चूज़ों ने कहा, "अगर तुम उसे न खाने का वादा करो तो हम तुम्हें बताएंगे."

"बिलकुल मत डरो, मैं उसे नहीं खाऊंगा!"

"अच्छा, क्या तुम उस आदमी को पेड़ के नीचे बैठे हुए देख रहे हो, उसी ने यह किया."

चील पेड़ से नीचे उड़ गया.

"तुम्हें जो भी चाहिए मुझसे मांगो और मैं वह करूंगा." उसने लुढ़कते मटर से कहा, "यह पहली बार है कि मेरा कोई भी बच्चा इतनी भारी बारिश में नहीं डूबा है."

"मुझे मेरे अपने राज्य में वापिस ले चलो," लुढ़कते मटर ने चील से कहा.

चील ने कहा, "ऐसा करना आसान नहीं होगा, लेकिन अगर हम अपने साथ छह बैरल मांस और छह बैरल पानी ले जाएं तो मैं यह कर सकूंगा. हर बार जब मैं अपना सिर दाहिनी ओर घुमाऊं तो आप मांस का एक टुकड़ा मेरे मुंह में डाल देना, और हर बार जब मैं सर बाईं ओर घुमाऊं तो आप मुझे एक घूंट पानी देना. यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो हम कभी भी वहां नहीं पहुँच पाएंगे. क्योंकि मैं रास्ते में ही मर जाऊँगा."

उन्होंने छह बैरल मांस और छह पानी लिया और लुढ़कते मटर ने उन्हें चील की पीठ पर रख दिया और खुद भी चढ़ गया वे उड़े और जब भी चील अपना सिर दाहिनी ओर घुमाता, लुढ़कता मटर उसके मुंह में कुछ मांस डाल देता और जब भी वह उसे बायीं ओर घुमाता तो वह उसे एक घूंट पानी देता.

वे काफी देर तक उड़ते रहे और वे लगभग लुढ़कते मटर के राज्य तक पहुंचने ही वाले थे कि चील ने फिर से अपना सिर दाहिनी ओर घुमाया. लुढ़कते मटर ने छह में से आखिरी बैरल में देखा, और यह देखकर कि वहां मांस का एक भी टुकड़ा नहीं बचा था, उसने अपने पैर का एक टुकड़ा काटा और उसे दे दिया.

"वह क्या था जो मैंने अभी खाया?" चील ने पूछा. "बहुत अच्छा था."

"मेरे अपने मांस का एक टुकड़ा," लुढ़कते मटर ने अपने पैर की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया.

चील ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसने मांस का टुकड़ा उगल दिया और, लुढ़कते मटर को उसका इंतजार करने के लिए छोड़कर, और वो जीवित पानी लाने के लिए उड़ गया. वह जल्द ही जीवित पानी के साथ वापस आया, और जैसे ही चील ने उसे लुढ़कते मटर के पैर पर डाला, वह तेजी से फिर से ठीक हो गया.

उसके बाद चील घर उड़ गई, और लुढ़कता मटर अपने तीन अविश्वासी दोस्तों की तलाश में निकल पड़ा.

अब, तीनों राजकुमारी के पिता के महल में पहुंच गए थे, और अब वे वहीं रह रहे थे और आपस में झगड़ भी रहे थे, क्योंकि उनमें से प्रत्येक राजकुमारी से शादी करना चाहता था और उसे दूसरों को नहीं देना चाहता था.

यहीं पर लुढ़कते मटर ने उन्हें पाया, और जब उन्होंने उसे देखा तो वे डर से सफेद हो गए.

लुढ़कते मटर ने कहा:

"देखो मेरे अपने भाइयों ने मुझे धोखा दिया, तो मैं तुमसे क्या उम्मीद कर सकता हूँ! मुझे लगता है कि मैं तुम्हें माफ़ कर दूंगा."

फिर उसने उन्हें माफ कर दिया.

उसके तुरंत बाद लुढ़कते मटर ने राजकुमारी से शादी की और वे दोनों हमेशा खुशी-खुशी साथ रहे.